चेतचन्द्रिका।

अर्थात्

श्री बैकुंठबासी महाराजा चेतसिंह की आज्ञानुसार श्री रघुनाथ कवि के पुत्र गोकुलनाथ कवि कृत सविधि अलंकार बर्णन।

"नित्य अन्हात है छीरधि में ससि तो मुख की समता लहिबे को"

श्रीयुत बाबू चन्द्रेश्वरप्रसाद सिंह रईस चैनपुर जिला छपरा के प्रसन्नतार्थं डुमराँव-निवासी नकछेदी तिवारी द्वारा प्रकाशित।

भारतजीवन प्रेस के अधिकार से
र उसी प्रेस में मिलैगी।

काशी।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई।

सन् १८९४ ई०।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ।<)
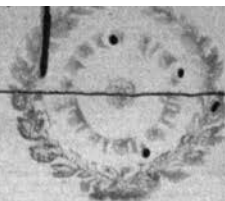
चेतचन्द्रिका।

कवित्त।

सिंदुरभरो भसुंड एक दन्त सोहै मानो जस जगदीश ताको दीसै बड़ो रती को। रिद्धि लए सिद्धि लए सुमति समृद्धि लए लम्बोदर लीनो है सदन सरस्वती को ॥ चारो फलदायक सहायक है साँकरे यों सिइयै चरन द्रूहै मति महामती को। गोकुल कहत महादेव को लड़ाइतो है गजमुख चन्दभाल लाल पारवती को ॥ १ ॥

अपरञ्च।

कटै त्रयताप दाप व्यापै भवभय की न कलुष नसात गन मिटत कलेस के। सुबुधि बढ़ति मुख लालिमा चढ़ति चारु कुमति उठति तम देखि ज्यों दिनेस के॥ गोकुल कहत गुनगन-सरसत बर मोद दरसत जस गावैं सब देस के।

धाम बीच बसै आइ कमला अचल ह्वै कै सेवत
बिमल पदकमल गनेसके ॥ २ ॥

अथ गुरुचरणस्तुति।

दुरिददरन भवभयउधरन चारु वारिज-
बरन मन मधुप थितौतहीं। कामना-भरन
फरै चारिहू फरन अंधतिमिरहरन रबि रूप
से हितौतहीं ॥ गोकुल कहत मोद महत ल-
हत जन जिताई चहतु है रहतु है ततौतहौं।
औढरढरन असरन के एरन महामंगलकरन
गुरु-चरन चितौतहीं ॥ ३ ॥

दोहा।

भजत पंथ बलिभद्र गुरु के धरि पद पर माथ।
भयो कृतारथ जगत मे मतिमत गोकुलनाथ॥४॥
दरन सकल भवभय लखें भरन मोद मनरंज।
भुवनेस्वरि जगदम्ब की थपु हिय सर पदकञ्ज॥५॥
श्रीगुरुपदचरनन कियो इष्ट चरन दरदंद।
अब मै बरनत करत हौं ध्यान सहित नदनंद॥६॥

अथ श्रीकृष्ण को ध्यान – कवित्त।

पियरी पगिया पर मोरपखा गति बायु लगें चलभावत है। परि गोधनरेनु रही मुख पै बढ़ि खेदकनों छबि छावत है॥ करि गाइन गोकुल आगी हरे हरें बाँसुरी मंद बजावत है। इत आइ लखौ वह कारो अहीर को कालिंदी-कूल तें आवत है॥ ७॥

पेँच खुले पगरी के उड़ैं फिरैं कुण्डल को प्रतिमा मुख दौरी। तैसियै लोल लसैं जुलफैं रत एही न मानति धावति धौरी॥ गोकुलनाथ किये गति आतुर चातुर की छबि देखिन बौरी। ग्वालनि तें बढ़िजात चल्यौ फहराति काँधा पर पीत पिछौरी॥ ८॥

डोलि परे मग मे पग री पगरीं तें खुले तिमि पेच सुहावत। चंद सो आनन खेदभरो मुकुले अरबिन्दने नैन लजावत॥ गोकुल गौँ जो प्रसूनहरा लपटो हिये हेरि हियो हुलसावत।

कौन सोहागिनि को भरि भाग भरे अनुराग चलि हरि आवत ॥ ९ ॥

ललित कपोलनि पै कुंडल कलित लोल कूटि काकपच्छ ते वे डोलै लगे बात है। लटपटी पौरी पाग पर सोहै मोरपच्छ झपकोलि अच्छ मुकुलित जलजात है॥ गोकुल किसोर वह कौन को कहां को हैरी चित चढ़ि गयो मेरे कछु न सोहात है। जात कुञ्जघातें जमुना को हौं बिलोक्यौ आजु साँवरो सो लटपटे पगनि प्रभात है॥ १० ॥

गोधन ते जमुना की ओर तें हमारी खोरि आइ गयो छाइ छबि मुकुट बिसाल को। गौवन को घेरनि लकुट की सुफेरनि त्यौं बाँसुरा की टेरनि लफनि बनमाल की॥ गोकुल कहत पीतपट की चटक चारु भौंहन की मटक लटक लोनी चाल की। भूलति न ता खिन तें गड़ि रही आँखिन में साँवरी सलोनी वह मूरति गोपाल की॥ ११ ॥

अथ कबिप्रशंसा—दोहा ।

मनबचकर्मनि कै करै सबही को उपकार ।
लहत सुकबि या जगत में ज्यों सुरसरि की धार ॥
ऐसो सरल सुभाव लखि बुधजन को सुखदान ।
जथा उक्ति हौंहूं करी कबिता सुनहु सुजान॥१३

सोरठा ।

लखि जग को व्योहार,भ्रम तजि हौं कबिता करी।
मनि मोतिन के हार,लेत लेत कोउ पोति के॥१४
मनि गुन अगुन बिचार, जानत जो जग जौहरी।
कह जानत मनिहार,मनिहारन के मोल गुन॥१५

अथ बंसबर्णन—दोहा ।

ब्रम्हा के मनुते भयो गौतम मुनि तपथान ।
ज्यों हर के गननाथजू ज्यों कस्यप के भान॥१६॥
गौतम के कुल में भयो कीदूमिश्र महान ।
तेजपुंज तपधाम यों ज्यों बसिष्ट भृगुभान ॥१७॥

कबित्त ।

प्रानायाम साधै अवराधै परमातमा को गौतम के कुल को कमल सो गुनो परै । जाको नाम

लेत देत खेद तीनौं तापन के देह मे ते पापन
को पुन सो धुनो परै ॥ गोकुल कहत द्विजराज
द्विजराज वंस साधुमनहंसन को आनद पुनो
परै । महा तपधाम अभिराम जगती मे आज
ऐसो कीदू मिसिर को सुजस सुनो परै ॥१८॥

दोहा ।

तपवर कीदू मिसिर को बरनि कहाँ लो जाइ ।
धोती जाकी बायु बस नभ मे परी भुराइ ॥१९॥
कासिराज तिनको दियो परम दतरियागाम ।
ज्यौं कुवेर को हर दई अलकापुरी ललाम॥२०॥
कुल मे कीदूमिस्र के भयो जीवधन भूप ।
ज्यौं छीरधि के कामतरु सुधासुधा सु अनूप॥२१

कबित्त ।

देवद्विज पूजे परमातमा को कूजे सौंहैं ल-
गत न दूजे और भूप बने ग्रन के । गुनी गुनगाहै
ध्रुवधरम उमाहै खग्ग खिलन सो वाहै अरि
चाहै मोहिरन के ॥ गौतम अमान महादानि
बाहुबल बीर गोकुल निहाल करै दीन देखि छन

के ! मनको पयोधि लखि सोधि भलीभाँतिन सों अगन सघन गुनगन जीवधन के ॥२२॥

दोहा ।

ऐसे जिवधन के भये मनरञ्जन धनधाम ।
पुरसोतम के काम ज्यों ज्यों दशरथ के राम॥२३

कबित्त ।

धरमधुरंधर पुरंदर मही को महाजङ्ग जुरे मंदर सा पालक मुनीन को । गोकुल सुकबि जस पढ़त जगत जाको चन्द्रमा सो चारु चढ़ो सरद पुनीन को ॥ दीहदानि गौतम को कीरति लता को लखो बरस हजारन लौं सुमन लुनीन को । बैरिन को गंजन है भंजन दरिद्‌दीह रंजन करत मनरंजन गुनीन को ॥ २४ ॥

दोहा ।

मनरंजन के यों भये भूपति मंसाराम ।
सैनानी हर के भये पुरुसोतम के काम ॥ २५ ॥

कबित्त ।

रजत को धरा धराधर करपूर कैसे नीर सब

छीर होत सुखमा की रुख तें। सुमनसमूह होत मालती के जूह लखे द्योस कैसे चन्द होत मंद अरि दुख तें॥ गोकुल कहत निसि द्योस रैनि राका होति कुमुद से नैन सबही के भरे सुख तें। महाराज मंसाराम राइ को पढ़त जस सुधा कैसी धारा स्रवै कबिन के मुख तें॥२६॥

दोहा।

ऐसे मंसाराम के महाबीर बरिवगड।
उयो उदैगिरि तें मनो ग्रीषम तरनि प्रचगड॥२७॥

कबित्त।

साधुन को पूजै परमारथ को कूजै सोहैं गनत न दूजै रनपर तें प्रचगड के। सज्जन को पालै खलदलन को घालै हिये भूपन के सालै सदा जोरि भुजदगड कैं॥ गोकुल हरत दीन-दारिद कौं देखतहीं पेखतहीं जी न देत दगड तै अदगड के। पावै कौन पूरन पयोनिधि को पार कौन गावै गुन सिगरे महीप बरिवगड कै॥२८॥

साहस को सायर है माहिर सुबुद्धिन मे तीछन प्रताप लखें लखें मारतण्ड सो। गुरुता को बिन्ध सिन्धु पानिप को सूरता को कूरता को काटि कै करत खण्ड खण्ड सो॥ गोकुल सुकबि सदा दीनतरुवरनि पै कंचन बरस हुतो धन कै घमण्ड सो। मण्डन मही को खल-दलन को खण्डन है आजलों न भयो भया भूप बरिबण्ड सो॥ २९॥

दोहा।

मिल्यौ नृपति बरिबण्ड सो महासुकबि रघुनाथ।
ज्यौं गुरु गुरुता सों भयो रहत सुरप्पति साथ॥३०
काशी में रघुनाथ कबि प्रगट्यो सुमति अमन्द।
बिक्रम कै बैताल ज्यौं पृथीराज कै चन्द ॥३१॥
करे ग्रन्थ अनगनित जिन शास्त्रन के अनुसार।
अलङ्कार रस नाइका सहित छन्दबिस्तार ॥३२॥
आदर करि बरिवण्ड नृप राख्यो कबि रघुनाथ।
दै हय गय रथ पालकी दीन्हे अगनित गाथ॥३३॥

दियो ग्राम चौरा तिन्हे सुरसरिता के तीर ।
सुरसरिता सी बसति जहँ समति सुमति की भीर
सुकबि सहित बरिवण्ड नृप करि काशी को राज।
तन तजि काशीश्वर भए सहकबि आनद-साज॥
द्वै सुत नृप बरिवण्ड के भए भरे मतिगाथ ।
जैसे शंकर के भए सैनानी-गननाथ ॥३६॥

सोरठा।

जेठे नृप अवतंस, चेतसिंह राजा भए ।
पालत भुवदुज बंस, घालत जो खलदल सबल॥३७
लहुरे सिंह सुजान, महाबली दाता सुमति ।
जानत कछू न आन, चेतसिंह को हुकुम दूक॥

चेतसिंह को रूपबरनन।

नौतन चेत महीप चितै मन बैरिन के धरै धीरज धन्धन। गोकुल साधु रहैं सुख सों खल के कुल भागि बसै गिरिरन्धन॥ सेवक फूल भरे अनकूल भए प्रतिकूल ते कौन से अन्धन। छूटि परैं धनु बीरन के तरुनीन के टूटि परैं कटि-बन्धन॥ ३८॥

स्वभाववर्णन।

ध्याइ गुरुचरन अन्हाइ सुरसरिता मैं लच्छिमीनरायन को पूजै साधु संग में। सभा बीच बैठे आइ ऐंठे मन मोहन को सुभट्ट सलाम लेत साहिबी उमंग में॥ गोकुल सिकार खिलै केहरि कुरंगन को भूप चेतसिंह हनै बैरिन को जंग में। कलावान कबिन सों कबिता को ढंग देखि संग तरुनीन के रमत रतिरंग में॥ ४०॥

दोहा।

भए सुकबि रघुनाथ के तीनि पुत्र अभिराम।
क्रियावान उज्जल रहनि काव्यकला के धाम॥४१
बैजनाथ सब सों बड़े मध्यम गोकुलनाथ।
लघु गुरु गुरुता को धरै बिश्वनाथ जुतगाथ॥४२
गोकुल कबि पर करि कृपा चेतसिंह छितिपाल।
गाँव दियो घोरे दए दीन्हे दुरद बिसाल॥४३॥
फेरि सुकबि सों यों कह्यो करिकै अमित सनेहु
अलंकार मत में हमै ग्रन्थ एक करि देहु॥४४॥

सोरठा ।

सुने नृपति के बैन गोकुलनाथ कृपा भरे ।
पाइ हिये मे चैन ग्रन्थ करन लागे तुरत ॥४५॥

अथ अलंकार के नाम ।

प्रथम एक उपमा कहौं कहौं अनन्वय एक ।
उपमानो उपमेय इक लहियत सहित बिवेक ॥
पांच प्रतीप कहैं सुकबि षट रूपक के रूप ।
इक परिनाम उलेख है सुम्मृत एक अनूप॥४७॥
भ्रांति एक सन्देह इक आपन्हुति षटभेव ।
उत्प्रेचा षटभेद सौं बरनत है कबिदेव ॥४८॥
आपन्हव है एक औ षट सयोक्ति अनुमानि ।
तुल्यजोगिता चारि है दीपक चारि बखानि ॥
प्रति बस्तू उपमा सुइक है दृष्टांत सुएक ।
कहियत तीनि निदर्सना इक व्यतिरेक बिवेक॥
एक सहोक्ति बिनोक्ति है समासोक्ति इक जानि।
परिकर कहिये एक इक परिकुरांकुरहि मानि॥
तीनि भेद श्लेष के बरनत हैं सुखधाम ।
अप्रस्तुतपरसंस को एक भेद अभिराम ॥५२॥

प्रस्तुतांकुरी एक है परजायोक्ति अमन्द ।
है व्याजोक्ति अक्षेप की तीनि भेद दरदन्द ॥५३॥
एक बिरोधाभास है षट बिभावना होति ।
बिसेषोक्ति इक इक कहै आसम्भव को जोति॥
आसंगति है तीनि औ सात बिषम के रूप ।
तीनि भेद सम के कहत एक बिचित्र अनूप॥५५
अधिक दोइ है अल्प इक अन्योन्या है एक ।
बिसेसोक्ति के कहत हैं तीनि भेद गहि टेक॥५६
दोइ कहत व्याघात कबि कारनमाला एक ।
एक भेद एकावली माला दीपक एक ॥५७॥
सार एक क्रमिका सुइक है परजाय सुरीति ।
परिवृत एक कहैं सुकबि परिसंख्या इक रीति॥
एक बिकल्प कहैं सुकबि द्वैहि समुच्चे भेद ।
कारकदीपक एक है इक समाधि हरखेद॥५८
प्रत्यनीक बरनन करत अलङ्कार इक रीति ।
काव्यार्थापति एक बिध कहत सुकबि करि प्रीति॥
काव्यलिंग इक कहत हैं है अर्थान्तरन्यास ।
एक बिकस्वर एक बिध है प्रौढ़ोक्ति उजास॥६१

एक भेद सम्भावना इक मिथ्याध्यवसीत ।
ललित एक है तीनि बिधि परहरषन सुभरीत ॥
एक बिषादन चारि बिधि है उल्लास अमन्द ।
आवज्ञा है एक औ एक अनुज्ञा चन्द ॥६३॥
लेसायक मुद्रा सुयक एकावली सुरीति ।
तद्गुन इक इक अनगुनो कहत मिलित इक रीति
एक कहत सामान्य कबि औ उन्मीलित एक ।
और एक बैसिष्य इक गूढ़ोत्तर गहि टेक ॥६५॥
चित्रोत्तर इक एक है सूक्ष्म पीहित एक ।
इक व्याजोक्ति गुढ़ोक्ति इक विवृतोक्ति बिधि एक॥
जुक्ति एक लोकोक्ति इक इक छेकोक्ति सुढंग ।
काकु एक वक्रोक्ति इक सुभावोक्ति सुभ अंग॥६७
भाविक एक उदात है एक उत्तरा होत ।
पुनरुक्त अत्युक्ति इक एक कहत कबिगोत ॥६८॥
प्रेमात्युक्ति निरुक्ति इक एक भेद प्रतिखेद ।
विधि इक कहियत हेत इक अलङ्कार हित भेद॥

इति अलङ्कारों के नाम।

अथ अलङ्कार के रूप।

उपमा लक्षण।

उपमा कहत अवन्य को कहत वर्न्य उपमेय।
वाचक जो दुहु मधि रहत कहत धर्मगुन जेय॥
इन चारयो मिलि होति है पूरन उपमा पर्म।
वाचक तरे अवर्न्य के नित्य दुहन को धर्म॥७१॥

उदाहरण।

वारिज सी मुख मौन से नैन सिबार से बारन को सुखदा सी। कंबु सो कण्ठ लसै कुच को कसि भौंर सी नाभि भरी भ्रमभासी॥ गोकुल धार सी रोमावली लहरी सी लसी त्रिवली छबिरासी। लाल बिहार करौ रस मैं वह बाल बनी सुख की सरिता सी॥७२॥

काहू चवाइन को कहियो सुनि कै मन क्यौं भ्रम सो मसती हौ। को ब्रज में तुम सी तरुनी जेहि के डर सों जियरे ससती हौ॥ गोकुल प्यारे रहो चिरजीव सदा जेहि के हियरे बसती हौ। काम से वे अभिराम लसैं तुमहू तो बनी रति सी लसती हौ॥७३॥

आनँद देत चकोर हितून को है खल को-कन को दुखदारो। कन्त है सन्त कुमोदन को कल चाँदनी कित्ति महा सितभारो ॥ गोकुल सील सुधा सरसै बरसै सुख है अतिही उजि-यारो। मन्द करै अरबिन्दन को जस चन्द सो चेत महीप तिहारो ॥ ७४ ॥

सोरठा।

उदै सूर सों भाल, सिँदुरघसो गनेस को ।
हरत बिघन को जाल, जो जगव्यापक तिमिर को॥

अनन्वय लछन।

उपमा उपमेयत्व जहँ एक बस्तु मे होत ।
नियत न वर्न्य अवर्न्य को सोऽनन्वय सुखसोत७६

यथा।

मोहन के मन मोहन को पढ़ि मोहनिमंत्र को तंत्र लहो हो। रूप की रासि समेटि सबै नख तें सिखलौं लै लपेटि रही हो॥ गोकुल को तुम सो ब्रज मे तरुनी तिय मे सिरताज कही हो। भागभरी खुमसी सुख सो उमसी सु-खमा तुम सी तुमही हो॥ ७७ ॥

कबित्त ।

सुंदर सुसील सरवग्य साहिबी को सिंधु भारी भुजदण्डन को भूंप सिरताज है। औढर-ढरन असरन को सरन सदा दुवनदरन जाकी करन कि काज है॥ गोकुल सुकवि कहै महा-दानि दीनन को सुकवि प्रबीनन को पालत समाज है। कामै गुन पावै जाहि तोमै सरिसा-है सुनो चेत सिंह ऐसो चेतसिंह महराज है॥७८॥

सोरठा ।

तोसी तुही न आन, लखी सुंदरी तरुनि तिय ।
हरि सौतिन को मान,तू बस कियो सुजान पिय॥

उपमानोपमेय लच्छन ।

उपमा को उपमेय करि फिरि ताको उपमान ।
उपमानो उपमेय तहँ बाचक धर्म समान ॥८०॥

यथा ।

प्रीतम के चख चारु चकोरन दै मुसुकानि अमी करै चेरो । रूप रसै बरसै सरसै नखता-वलि लौं मुकुतावलि घेरो ॥ गोकुल को तन-ताप हरै सब जीन भरै रबि काम करेरो । तो

मुख सो ससि सोहत है बलि सोहत है, ससि सो मुख तेरो ॥ ८१ ॥

अपरञ्च कवित्त ।

कस्यप सो मारतण्ड चण्डकला मण्डल की कस्यपी हुते हो तेज पुंज मारतण्ड से । छीर सिंधु ऐसो सुधासिंधु सुधासिंधु ऐसे छीर सिंधु सोहत है लहरि घमण्ड से ॥ गोकुल कहत सुनै जनक सरिस एतै और मै न लखि सुनो भूपति उदण्ड से । भूप बरिवण्ड से महीप चेतसिंह भए तुमही कै तुम से महीप बरिवण्ड से ॥ ८२ ॥

सोरठा ।

तो मुख ससि की जोर, ससि तो मुख सो ससिमुखी ।
पियचखचतुर चकोर, चाव चढ़े चाहत रहैं ॥

प्रतीप लच्छन ।

उपमा को उपमेय करि उपमेयै उपमान ।
जह वाचक अधवर्न्य के कहै प्रतीप सुजान॥८४॥

यथा ।

जिनकी पगपानि से पंकज अरु करी करकी

उपमा उपहै । लसै लंक सो चारि को अंक उरोजनि सोहै सिरीफल सोच गहै ॥ कबि गोकुल कण्ठ सो कम्बु कलाधर सारदी साँझ के माँझ चहै । उनके मुख सो ससि आजहि को पिय प्यारे प्रवीन कहै तो कहै ॥ ८५ ॥

गौतम चेत महीप बली अपने भुज के बल सों छिति पोसो । नास कर्यो खल के दल को बल सो लहि दोस कछू जब रोसो ॥ दीन निहाल कर्यो लखतै कबि गोकुलनाथ गुनीगन मोसो । दानि महाफल चारि को होइगो जानि परै कलपद्रुम तोसो ॥ ८६ ॥

सोरठा ।

तो पद सी अनुमानि, अरुन अमल कोरे कमल ।
याही तें सनमानि, अवतंमित मोहन करे॥८७॥

द्वितीय प्रतीप ।

उपमा को उपमेय करि भयो वर्न्य उपमान ।
लहत निरादर वर्न्य सो दूजो सुनो सुजान॥८८॥

यथा ।

दासी हौं मै बलि रावरे की यह मेरी कही

है सही मति लूनो । पेखियै आज कलानिधि को केहि भाँति कला धरि कै भयो दूनो ॥ गोकुल कैसी सुधा बरसै सरसै सुखमा लहि सारदी पूनो । देखिये तौ चलि भावती के मुखतें ससि आजु को होत न ऊनो ॥ ८९ ॥

सोरठा ।

चित दै चित औ लाल, तरुन अमल फूले कमल ।
उनके पगतें हाल, चलि बलि देखो सरवरै ॥ ९०

तृतीय प्रतीप ।

भयो वर्न्य उपमान जो लाभ ताहि को होत ।
लहत निरादर तीसरो वर्न्य अवर्न्य जु होत ॥ ९१

यथा ।

को अपनी मति को जड़कै मतिमन्दन को गन को गहिहै हो । हासभरी ब्रजवासिन की चहुँ ओर तें को सुनि कै दहिहै गो ॥ गोकुलनाथ को संग करै तुमको पलप्रीति भरै चहिहै सो । चावचढ़ो चढ़ि चन्द कहा उनकी मुख की सम कै कहिहै को ॥ ९२ ॥

अपरञ्च।

तन वैहरि ताप करैगी कितो सम तो बि-रहानल की झरसैं। धैरी बीज नचैगी तीनीच कहा हम तोड़ी सी मीच महा परसैं॥ सुनि गोकुल काम कठोर कहा सरि तोहरि हेरि हिए तरसैं। सरसै घनघोर कहा मड़ि कै चख तोसि बियोगिनि को बरसैं॥ ९३॥

सोरठा।

एरे जलद अयान, बड़े बूंद बरसै कहा।
मेरे नैन समान, होन चहै ह्वै है कहा॥९४॥

चतुर्थ प्रतीप।

भयो वर्न्य उपमान जो, ता लहि जो उपमान।
भयो वर्न्य ताको कहत, मिथ्या चौथो जान॥९५

यथा।

पंकज पायन से कहियै कटि सी लखि काम की क्षाम अँगूठी। रोमबली सी भुजंग लखी कुच सी छबि कोकनहूं की अनूठी॥ गोकुल आनन सो ससि जो कहियै गहियै उ-

पमा यह जूठी । भावती की मुसुकानि सी एजू
अमी कहिये सो तो लागति झूठी ॥ ९६ ॥

सोरठा ।

तो मुख अमल अमंद,जोति भरो निसिदिन रहै
सरि करि करै पसंद, सुधा सुधाकर की कुमति॥

पंचम प्रतीप ।

भयो वर्न्य उपमान जो ताको करि सनमान ।
व्यर्थ करो उपमान को भयो जो वर्न्य समान ॥

यथा ।

पग पानि सोहैं पंकज न पेखियत कहा
लङ्क लखे चारिहू के अङ्क की लसनि है । गो-
कुल कहत मुख सुखमा समूह सोहै कहा चंद्र
चंद्रिका बिलोकि बिहसनि है ॥ सोहै रोम
अवली के नवली भुजंगो कहा कुचन के आगे
कहा कोक की गसनि है । एरी भागभरी तेरे
भौंहन के सोहै कहा काम अभिराम के कमान
की कसनि है ॥ ९८ ॥

सोरठा ।

लखिलखि तो पगपानि,ठकुराइनि राते अमल ।
धरे न कछु अनुमानि, ए कोरे किसले कमल ॥

दोहा ।

या बिधि पाँच प्रकार को कहै प्रतीप सुजान ।
होय बर्न्य आबर्न्य जहँ बर्न्य होइ उपमान॥१०१॥

रूपक लच्छन ।

बिसै कहत उपमेय को है बिसई उपमान ।
वाचक बिन ए जहँ मिलत तहँ रूपक सुखदान॥
क्रियारहित उपमान के लिए धर्म को अंस ।
मिलि अभेद तद्रूप तहं रूपक कहत प्रसंस १०३
न्यून अधिक सम होत है तीनि तीनि ए दोय।
या बिधि सों षट भेद को रूपक कहियै जोय॥

यथा ।

द्योस निसा न परै पलको पल पेखिवेही के उछाह छए हैं। पान करै मुसुकानि अमीरस छाक छके अतिसै रमए हैं॥ गोकुल भूलि भरे से ढरै ढिग भाग सोहाग के राग रए हैं । तो मुख चंद चितै उनके चख चाव चढ़े ते चकोर भए हैं॥ १०५॥

कंचुकी स्याम घटा घन की बिजुरी जरी

कोर कहै मन मेरो। जूगनू जोति जवाहिर की मुकुता बग की गन सों घन घेरो॥ गोकुल रोमावली लतिका है मलै-जल सो लहरै भरो नेरो। पीतम के चख चातक को तप क्यों न हरै हिय पावस तेरो॥ १०६॥

सोरठा।

तो मुख संकर सेइ, कर कमलनि मर पै अमल।
मैन महादुख देइ, पिय को हिय अचरज यहै॥

न्यून।

कुंकुम राग परागभरी कछू स्यामताई मधुमत्त अली हो। राजति रोमावली बढ़ि नाल सो नाभि सरोवरनी तें चली जो॥ गोकुल है हरि पूजिबे जोग जगै जिन सो मुखदान बली को। टंद हरै मकरंद बिना वृषभानलली कुच-कौल-कली तो॥ १०८॥

सोरठा।

सोहै बिना पराग, नैन नलिन तो अति अरस।
भरे अधिकअनुराग, पियचख अलिको सुखसदन॥

अधिक।

चारु सुवास-भरो रस रास प्रकास मई सुचि है रुचि घेरो। श्री को अवास धरे सुख आस करें पिय के चखभौंर बसेरो॥ गोकुल राग सोहाग सुनी लहि जोबन सूर सहायक नेरो। फूलभरो निसि द्यौस रहै मनभावति जू मुख पंकज तेरो॥ ११०॥

सोरठा।

तो कचघन जस लेत, बड़े बड़े धरनीधरे।
बिन माँगेही देत, जीवन पियचख चातकहि॥

तद्रूपक।

जगत की जोति एक ठौर बिधि सिद्धि करि मेरे जान तोको भली भाँतिन सँवारि कै। रूप गुन सरस सयान सुकुमारताई तोही मे कई है नीकी बिधि निरधारि कै॥ गोकुल न बाहिरे बगर के डगरि कहूं नजरि लंगगी री बजरि नरनारि कै। दौरि दौरि देखन लगत गाँव गोकुल के तो मुख-सुधानिधि सुधानिधि बिचारि कै॥ ११२॥

अपरञ्च।

दच्छिन मे जिन्है देखि लच्छन मे देखियत लच्छन सो अच्छन मे स्वच्छ निरधारि कै। ते वैं अनकूल भये आनद अतूल छए छोड़ि है नवेली मनमेली ते बिसारि कै॥ गोकुल कहत रूप रंग रस बस महा छोह सों छए हैं भूली गति मति हारि कै। प्यारे के बसत चखचञ्चरीक आठो जाम तेरे मुखपंकज में पंकज बिचारि कै॥११३॥

सोरठा।

तो कुच संकर जानि, संकर अति आनदभरो।
रोमवली फनि रानि, नाभि कूप सो कढ़ि चली॥
तो मुखससि ससि मानि, अरी बिंधुतुद भ्रमभरो।
दौरि गहैगो आनि, यातें दुरि पतिभौन भजि॥

न्यूनतप।

चञ्चल चलाक छरकायल छबीले बड़े सुखमा सों खोले खुले खेलत महानी के। रंगन सो भारि करतार के सँवारे सोहैं निरखत हारे जिन्है मैनहूं की रानी के॥ गोकुल पियारे के

हिया रे हरखित होत हेरतही ऐसे जग जन सुखदानी के। और की परत आँखें ढरकि न धोरे होत तेरे चख-मीनैं लखि मीन बिन पानी के ॥ ११६ ॥

सोरठा।

रूप सरित सरितान, कौन कहै तोको चतुर।
नाभी भौंर अमान, परि बूड़ै मन बारि बिन ॥

कवित्त।

फूल सों भरी है चारु चारुता हरी है सुकुमारता खरी है करी कर तें सँवारि कै। परन सों पूरी मढ़ी परिमल रूरी महा मण्डन महा की मैल होयै है बिचारि कै ॥ गोकुल गोपाललाल देखी है परेखी भहूं तुमहूं चलो हो लली पौर पै निहारि कै। वा दिन तें उनको लगो है मधुमता मन एरी कामलजा तू लतै है निरधारि कै ॥ ११८ ॥

सोरठा।

सहस कहैं मतिमन्द, तो मुख बारिज बारिजहि।
फूल्यो रहै अमंद यह निसदिन लहि मित्र लग॥

विषद अभेद।

सोहत है सुकुमार अरुन अमल आंछे दे-खतही जिनकी अमोघ अघ न रहै। मोद मक-रंद भरे सौंध सुखमाकी जाकी मिलत पराग की मिलत चारो फेर है॥ गोकुल कहत है अनेक कामना की दानि जोहत ही मिटत उताप हर वर है। श्रीपति की चरन सरोजन में बसो रहै भूप चेतसिंह तेरो मन मधुकर है॥१२०॥

परिनाम लच्छण।

होत बिषै बिषई जहाँ क्रिया करन के हेत।
क्रिया धर्म उपमेय को है परिनाम सचेत॥१२१

यथा।

कुछु भूपति को मरजी न मिलै अरजी सु-करी कितनो भतियां। कवि गोकुल रावरे को गुन रूप बिसूरत ज्यौं परचै छतियां॥ निकु-लाइ हिये सियराइ इतो कर-कंज लिखी पहुंचो प्रतियां। फिरि बांचि न चेत रहैं उचरैं तुव आनन अंबुज की बतियां॥ १२२॥

सोरठा ।

तो चखं कंजन कोर, दौरि दौरि खंजनभरी ।
पिय चितवत बरजोर, हरैं लेत हारैं न ये॥१२३

उल्लेखलक्षण ।

बहुबिधि बर्नत बर्न्य को जहँ बहुजन सुखदान।
नियतारथ को भ्रम नहीं तहँ उल्लेख सुजान॥१२४॥

यथा ।

बेदुज बिराट कहैं ठाठ महिमा को कहैं देव-तरुबर दीन दानि बड़े गथ को । रघुकुल भान कहैं परम सुजान देखि जगत को ईस बीस बिसे पुन्य पथ को ॥ गोकुल कहत मिथिला के पुरबासी राम बाम अभिराम रूप भाखैं मनमथ को । भूप भुवमंडल को कहत हैं दिगपाल बैरी कहैं काल है तू लाल दसरथ को ॥ १२५ ॥

काम कहैं कामिनी कलपतरु कहैं दीन भूप कहैं रूप है प्रचण्ड मारतंण्ड को । साधु कहैं सीलसिंधु बिंध कहै बीर भिरे गुनी ते ग-नेस कहैं मति की उमंड को ॥ गोकुल कहत

हौं लहत हौं पुरंदर सो चेतसिंह भूप भयो भू-
रतखंड को । बैरी कहैं काल साल कहैं खल
दल देखि हितुन की मौल कहैं लाल बरिबंड
को॥ १२६ ॥

सोरठा ।

मौति कहैं हियसाल, लाल माल हिय की कहैं।
सरमसीव गुरु बाल, कामलता अलिजन सबै ॥

द्वितीय उल्लेख लक्षण ।

एक करत जहँ बर्न्य को बहु भांतिन उल्लेख ।
नियतारथ को नियत करि पाइ सदृस गुन भेख॥

यथा ।

सखिन के सुमति मे उकति कल कोकिल
की गुरुजन हूं के धुनि लाज की कथान की ।
फूलन अरुन चरनम्बुज पै गुंज पुंज चाव सी च-
ढ़ति चंचरीक चरचान की ॥ प्रीतम के स्रवन
समीपही जुगुति होति काम तंत्र मंत्र के बरन
गुनगान की । सौतिन के कानन में हालाहल
ह्वै हलति एरी सुखदानि तो बजन बिकुवान की॥

सोरठा ।

तू पियं के हिय बाल, सोनजुही की माल है ।
सौतिन के उर साल, तुही सिरोमनि बधुन की॥

स्मृति लक्षण ।

उपमा लखि उपमेय को स्मर्न सम्मृति है सोय ।
बर्न्य लखे आवर्न्य की सुधि आएहू होय ॥१३१

यथा सवैया ।

वा दिन कालिँदी-कूल पै न्हात लख्यो मुख रावरे रूप अमंदहि । ता दिन तें कछु ऐसी लसी है दसा जो बसी है गसि नंदनंदहि ॥ गोकुल भूल भरे सि रहैं न चहैं खिन खेलन के फरफंदहि । द्यौस में पंकज पेखो करैं सजनी रजनी भरि देखत चंदहि ॥ १३२ ॥

सोरठा ।

वा दिन औचक आइ, लखि तो आनन हरि गए।
तब दिन तें नित जाइ, हेरत कानन कंज के ॥

भ्रांति लक्षण ।

होत अतथ्यज्ञान जहँ रूप लखे सम जौन ।
भ्रम को बरनत भ्रान्ति सब अलंकारमति तौन॥

यथा सवैया।

तोहि सहाइ बिना मन में यहि काम दयो कितनो दुख रोखि। गोंकुल गौन कियो कित को इतनी चित तें हित को मन मोखि॥ ऐसि कहै बिरहाकुल राम कहा, कहिये हिय मे भ्रम पोखि। सोनजुही की लता लहि के हिय सों गहि लावत हैं सिय धोखि॥१३५॥

कवित्त।

जानि मुखचंद चहुं ओर तें चकोर दौरैं चूसिबे को अमी चाहि चोचन पसारे ते। बोलि बरही के गन डगरि कगरि आवैं बारन बिलोकि धोखैं जल घनकारे के॥ गोकुल समीर संग फैलत सुगंध जानि माधुरीलता है छोड़ि कुंजन डरारे जी। कैसे कै बगर लौं डगरि आवै ए जू वह रंगर परे हैं वे मधुप मतवारे ते॥

सोरठा।

री सखि मोहि बचाय, या मतवारे भ्रमर सों।
डसो चहत मुख आय, भरमभरो बारिज गुनै॥

संदेह लक्षण।

बहुविधि बरनत बर्न्य जहँ नियत न तथ्य अतथ्य।
अलंकार संदेह तहँ बरनैत हैं मति-पथ्य ॥

यथा।

भूपति भगीरथ की कीरति की गैल कैधौं कैधौं सुरसरिता है जग-जन तारई। कैधौं सतो-गुन की धसो है धार धरनी पै कैधौं ध्रुव धरम की परम कला नई ॥ गोकुल गोबिंद के सरस चरनांबुज तें कैधौं मकरंद को प्रवाह प्रगटावई॥ फूली फरी हरी दूहूँ ओर भूमिपाटी मध्य बसुधा बधू की कैधौं माँग मुकुतामई ॥ १३८ ॥

कैधौं बिधि कञ्चन-जरीब धरी नापिबे को देखि कै अपार है पसार पुन्य थर को। कैधौं सेत सोने को रच्यो है करतार जा पै पार गति लेत गन देवन को नर को॥ गोकुल सुपथ मन-मथ रथ को है कैधौं सतोगुन भू पै रस अद्भुत ठर को। भोर हेरि सुरसरिता की ओर कैधौं परो पारावार लौं है प्रतिबिम्ब दिनकर को ॥

अपरंच।

महाराज चेतसिंह रावरी सभा में सोहैं दीपन समेत कैधौं रोसनी के भार हैं। कैधौं रितुराज मानि मेरे जान साहिब को फूले देव-तरु कीन्हें प्रभा को पमार है॥ गोकुल कहत रिद्धि सिद्धि भई कैधौं खुले रावरे सुकृति पौधा सोभा के अगार हैं। जानि छितिकान्त चढ़े बि-मल बिमान कैधौं आये देखिबे को तुम्है धरा के कुमार हैं॥ १४१॥

सोरठा।

यह केकी हरषाय, बोलि लखौ फिरि रोस कै।
तौ कच समुझि न जाय, इहै मेघ अहिकुल किधौं॥

अपन्हुति लक्षण।

मिथ्या की जै सत्त को सत्य सु मिथ्या होत।
आप्यन्हुति षट भेद सो बरनत है कविगोत॥

यथा।

छै छिति को नभमण्डल लों ब्रह्मण्ड है चण्ड छटानि सों छावति। जानि परैगी घरी

पल में कवि गोकुल हैं हम तोहि सुनावति ॥ चन्द को तू करि मन्द बिचार सखी अबहीं नहिं तो तन तावति। आगि उठी बड़वानल तें बिन घाम की पूरब तें चलि आवति॥ १४४॥

चाहि चाहि उरज उतङ्ग ओज भावती को कटि टूटिबे को मन मेरो री डरत है। याको कहा कहौं भई बकबात औरै कछू जानी ना परति बिधि कहाधौं करत है॥ सौतिन को मन बन तारि डारिहै गो कहै गोकुल खुलो है कुम्भ नैननि परत है। बूड़ो हुतो आनँद सों रूप के प्रयोनिधि मै देख सोई मदन मतङ्ग उभरत है॥ १४५॥

अपरंच।

गौतम-नरिन्द चेतसिंह तप तेज तेरो भगति को भाव सो सुन्यौ है जगदीस पै। लालसा बढ़ो है चारु चारुता चढ़ो है महामोद सों मढ़ो है मेरे जान भिसि सीस पै॥ गोकुल नसनी को भार है रतन रयो चाहत असीस दयो

तोसि नृप ईस पै । आयो देखिबे को तुम्है न-
जरि को ल्यायो धरि सहसफना को फनि देखो
मनि सीस पै ॥ १४६ ॥

सोरठा ।

यह ससि सखी न होय, बढ़ति ताप याके लखें।
एक भई कढ़ि सोय, विरहज्वाल चकचखन तें ॥

हेतु अपन्हुति लक्षण ।

मिथ्या को सत कीजिये कछु कारन जहँ पाइ।
हेतु अपन्हुति कहत हैं ताहि सकल कविराइ॥

यथा ।

बैनो सों हमारी हारे पन्नग पिरारे भये जादू
के पुकारे हैं बिसारे चित चाय को । गोकुल
कहत दाद चाहत दयो है हारि आपनी लख्यौ
है यातें कुटिल सुभाय को ॥ चन्द को बिचार
करि मन्द मेरी बौर कछू दौरि दुरौ करौ बेगि
बारन उपाय को । सहसौंफननि घेरे दसहू
दिसानि आवै बिष बरसावै सेस साहेब सहाय
को ॥ १४९ ॥

सोरठा।

अरी पन्नगी पेखि, कुचगिरि-गह्वर तें कढ़ी ।
रोमबली नहि लेखि, चढ़त मैर याकी लखे ॥

भ्रान्तापन्हुति लच्चण ।

भ्रम सङ्का मन और की कछु कारन लखि होय।
दूरि करे कहि सत्य सी भ्रान्तापन्हुति जोय ॥

यथा।

नैन भरैं अँसुवानि ढरैं तन कंपत स्वास बढ़ी निरसैहै। सूखि रह्यौ मुख पीरी परी अँग खेदभरो सो छुये तपतैंहै॥ गोकुल छोड़ि भली हौं गईही लली अबहीं न गयो पल द्वै है। चैन की कौन करै चरचा सुनि ऐसेही ग्वाल गँवार को गैहै ॥ १५२ ॥

सोरठा।

दृगजल काँपत सरीर,भयो पीत मुख ज्वर कहा।
एरी वहै अहीर, कछू बोलि दृत ह्वै गयो॥१५३

छेकापन्हुति लच्चन।

काहू की डर सीं जहां कहै अतथ्य अरोपि ।
छेकापन्हुति कहत तहँ तुरित तथ्य को गोपि ॥

यथा।

साँवरो सलोनो गात पीतपट सोहत सो अंबुज से आनन पै परै छबि ढरकी। मंत्र ऐसी जंत्र ऐसी तंत्र सी तरकि परै हँसनि चलनि चितवनि त्यौं सुधर की॥ गोकुल कहत बन-कुंजन को बासी लखि हाँसी सी करतु है री काम कलाधर की। इतने मे बोलि और मिलि हरि सुखदानी ? नाहीं मैं कहानी कही राम रघुबर की॥ १५५॥

सोरठा।

मोहिं मिलो छबिजाल, चटक भरी अनुराग मै।
अरी लहीं तू लाल, मै न लयो महँगो हुतो॥

कैतवापन्हुति लक्षण।

व्याज बचन लीन्हे जहाँ कहियतु मिथ्या बैन।
तहाँ कहत है कैतवापन्हुति जे मतिऐन॥१५७॥

यथा।

कैसो उयो धरि सीरे सुभाय को चाय महा चित में भरि चोखि। संग सरोज सखानि

लये द्वये भेष बनाय नक्षत्रनि ओखे ॥ गोकुल जानि कुमोदिनी सी हमको ब्रजचन्द बिना परिपोखे। पानिप प्रान पिएई सो लेत सखी यह सूर सुधाधर धोखे ॥ १५८ ॥

सोरठा।

बिनु पिय जानत बाम, समुझि पाछिले बैर को।
फूलन के मिसि काम, सखि बानन सो लखु हनै ॥

पर्यस्तापन्हुति लक्षण।

नियत अर्थ को छोड़ि कै अनियत अर्थ अरोप।
परजस्तापन्हुति कहत अलङ्कार करि चोप॥ १६०

यथा।

पूरित सु बास रसरास है प्रकासमई जगत के जीवन को महामोद छाया ते। हरि के सरस मन मधुप के बसिवे को बास को दएई रहै भरी दौहदाया जी ॥ गोकुल कहत जी हैं फूले सी सर सरिता मे तेन हैं कमल मन सरम भुलाया है। जन मन मानस मे फूलेई रहत तेई कमल कलामई चरन महामाया के ॥ १६१॥

सोरठा ।

सुनि हरि होइ न बाम, अरी बाम तू बाम है ।
जो पिय पै बिनु काम, याम भई निसुदिन रहै॥

उत्प्रेक्षालक्षन ।

जहं कहत सम्भावना सो सिगरे मतिधाम ।
बस्तु हेतु फल में लखि कबिजन कहत ललाम ॥
आकृतफल कारन लहि और बस्तु की जूह ।
होति जहाँ तहँ कहत हैं उत्प्रेक्षा कबिजूह ॥
बस्तु हेतु फल होत है दोइ दोइ बिस्तार ।
या बिधि सो षटभेद की उत्प्रेक्षा निरधार ॥
उक्त अनुक्त बिसै कहै बस्तूत्प्रेक्षा आम ।
सिद्धि असिद्धि बिसै कहैं फल हेतो अभिराम ॥

यथा०।

फागु मची बरसाने मे आज लखौ चलि कै जो कछू लखि जानौ । आलिन संग लली बृषभान की लाल सखान लये सुखसानौ ॥ ऐसी गुलाल की धूंधर मै तिन्है गोकुलनाथ बिलोकि बखानौ । साँवन साँझ की माँझ सखौ मिलि खेलत हैं चपला घन मानौ ॥१६७॥

आलस-भार भरे विलसैं अँग गोकुल नैननि नींद भरी त्यौं । सोइ गई रति कन्त सौं कै थकि सो छबि आइ लखे न अरी क्यौं ॥ रोमवली तिय की कुचबीच लसै श्रमवारि कै बुन्दभरी यौं । है कनकाचलसानु के मध्य सिंगार-लता मुकुतान फरी ज्यौं ॥ १६८ ॥

अपरंच ।

जरी को बिछौना मसनंद जरदोजी, पैन्हे अंबर जरी को बड़ी सुखमा की पूर मैं । आनन्द सौं भरी तापै बैठी नृप चेतसिंह गोकुल कहत जापै बरसत नूर हैं ॥ रतन को हुक्का सोहै पेच नै अरुन कर आनन मिलत ऐसी देखि परै मूरतैं । बाँधि कै मृनालन सौं पंकज कलानिधि को बस करि ल्यायो मन बरबस सूरपैं ॥१६९॥

सोरठा ।

मुकुतन भरी लखे न, अरी माँग या तरुनि की ।
लहि ससिसासन सैन, नखतन की बेधैं तिमिर ॥

अनुक्तविषय वस्तूत्प्रेक्षा यथा।

चमकै चपला झमकै जुगुनू रट भेकी भयानक लावत है। पिक झिल्लिन को गनमोरन सों मिलि कै अति सोर सुनावत है॥ कवि गोकुल प्यारी बिना गिरधारी कहौ अब कौन बचावत है। यहि ओर लखो छितिछोरहि तें घन बोरत सों चलो आवत है॥ १७१॥

सोरठा।

यह पछिवाहो पौन, माहमाँस को सुन सखी।
मनुहिमिगिरिकरिगौन,गिलेतुहिनआवतचल्यो॥

हेतूत्प्रेक्षा सिद्धविषया यथा।

पंकज से पानि पाय चन्द्रमा सो चारु मुख खञ्जन से नैन बैन माधुरी सों भरो है। उरज उतंग गङ्गधार सो लसत हार कम्बु ऐसो कण्ठ-काल कोकिल सो गरो है॥ नवली लता सी रोमअवली औ गोकुल है नाभि सरसिंधु सो है कापै जात तरो है। चारो जाम कामकला सिद्ध करिबे को मानो याते बिधि चार कैसो अङ्क लङ्क करो है॥ १७३॥

सोरठा।

निसिदिन भरो सुबास, तो आनन अम्बुज मनों।
यातें अलिगन पास, सुरस आस लागें लगे ॥

हेतूत्प्रेक्षा असिद्धविषया।

बारि बीच बूड़े खड़े बारिज ते सूर सेवै तैरे पानि पाइन की चारुता समक को। रोम-अवली को देखि नवली लवंगलता धीरज न धरति गहति यातें लग.को ॥ गोकुल उरोज अति उन्नतहि हारे देखि याही तें करे हैं विधि सानुमान नग को। रावरे की माँग की समान आंग पाइबे को यातें गङ्गधार देखो धोवै हरि-पग को ॥ १७५ ॥

अपरञ्च।

मानुस कीट पक्षी पसु आदि लता तरु बारि समेत तयो है। चारिहु जाम थक्यौ बल कै पर गोकुल कोज कहूं न गयो है ॥ खीस भरो सो मिल्यौ यहि को सजनी यह वाहू तें ज्वालजयो है। जारिबे को निसि द्योस मनो ससि को सब सूर कलानि दयो है ॥ १७६ ॥

सोरठा ।

तू मनमथ को बान, जानि पख्यौ दच्छिन पवन ।
तोहि करै पगिपान, मनु यातें हरहित करै ॥

फलोत्प्रेक्षा सिद्धविषया ।

आवति हौं गुन गौरि लखे तरुनापन सों सब आंग भरे हैं । गोकुल काम कलाकलवीन है नैन सों मैन के बान हरे हैं ॥ कञ्चनदाम सो काम चितै कटि पै त्रिवली विधि बन्ध नरे हैं । बोझ उरोजन को धरिबे को मनो बिधि पीन नितम्ब करे हैं ॥ १७८ ॥

अपरंच ।

साँझहि तैं रचि सेज सखी सुखदानि सबै रति सौज सँवारे । भूषन अङ्ग जराइन के सजि अंजन आंजि कै नैन सुधारे ॥ गोकुल मोहन सो मिलिबे को अहो मनभावति मंत्र बिचारे । काम को जीतिबे को सब जाम मनो सब धाम मे दीपक बारे ॥ १७९ ॥

सोरठा।

नाभी बांबी थान, रोमवली तजि फनिबधू ।
उरज मलैगिरि सान, चंढ़त मनो सौरभ चहैं॥

फलोत्प्रेचा अचिह्नविषया।

बारि में बूड़ि जपैं रवि की सरि पंकज पाइन को गहिवे को । बास उपास करैं बन में कटि की सम सिंघिनि यौं चहिवे को॥ गोकुल श्रीफल संकर सेइ चहै कुच की रुचि को नहिवे को। रोज अन्हात है छीरधि में ससि तो मुख की समता लहिवे को॥ १८१॥

सोरठा।

तो कटाच्छ अनुमानि,तुलिवे को मनमथ करै ।
अति अनियारे जानि, बान मालती मुकुल कै॥

अपन्हव लच्छन दोहा।

मिलित अपन्हुति सों जहाँ उत्प्रेच्छा है सुधाम।
ताहि अपन्हव कहत हैं अलंकार अभिराम॥

यथा।

राजति चारुन रोमावली सो मनो गिर तें

अलि-सेनि चली है। है रसरूप तरंग मनो लखि गोकुल कौन कहै त्रिबली है॥ रावरी नाभि पै ये न लसैं बलि नील निचोल को नीबी भली है। काम सरोवरनी मे मनो यह स्याम सी सोहति कौल-कली है॥ १८४॥

मो मत है नर नारिन को नख तें सिख लों सुखमा सरसायो। सौरत देखि हितू बन ब्रुन्द लसै जस चन्द सखा छबि छायो॥ गोकुल ए न है बौर के कूजे सो चेत महीप सुनो यों सुहायो। मूरतिवन्त मनो रतिकन्त बिलोकि बसन्त बिलोकन आयो॥ १८५॥

कञ्चन सलोनी पिचकारिन की धार ऐन चंचला जमाति को सरूप करखत है। भोडर की चमकन जुगनू जमक जुवतीन की न कूकनी कलापी हरखत है॥ गोकुल गुलाल उड़ै लाल भयो अंबर लों तहां चेतसिंह को सरूप परखत है। सांवन की साँझ माझ मेघ मघवा पै मनो भागभरे भू पै अनुराग बरखत है॥ १८६॥

सम्बन्धातिशयोक्ति लक्षण दोहा।

अनहोनी जो बात है होति जहाँ सो आइ ।
संबन्धातिसयोक्ति सो तहां कहैं कबिराइ॥१८७॥

अयोग्ययोग्य यथा।

बाम्हन बास कठौती हुती औ लटीं दुपटी जेहि बीतत सीवत। गोकुलक्षानी सरगरी भीति रहे जित चूहन के गन जीवत ॥ धाम सुदामै लह्यौ हरि सों जेहि देखियै देखि दिगप्पति भीवत। बैठे जितै गन चातिक के घन तें बन चोंच चलाइ कै पीवत ॥ १८८ ॥

सोरठा।

रे पिय प्रान समान बसत हिये जानंत सबै ।
खरी जरी यह मान जानि परै यातैं जुदो॥१८९॥

योग्यअयोग्य यथा।

नेरे न जाइ सकै सजनी लपटैं सी लगै बिरहागि बरे तें । गोकुल कौन सन्देसो सुनै सुनि चेत कहा मन मोह भरे तें ॥ आपन तो लिखि देत कहा यह बाँचि है कौन है जौन

जरे तें। पाती उठै बरि ताती इती हरि प्रान पियारि के पानि परे तें॥ १९०॥

सोरठा।

री पिय को सनमान है करिबो तिय को उचित।
हहा जरो यह मान जो न आदरै प्रानपति॥

अत्यन्तातिशयोक्ति लक्षण।

पर को पूरुब बरनिये पूरुब सो पर होय।
अत्यन्तातिशयोक्ति सो बरनत हैं कवि लोय॥

यथा सवैया

कछु दोस सुनाइ सरोस करी सजनी रसबाद सबाद भरे। चख चोट कै घूंघट ओट कयौ बदलि रुख त्योर तनेन करे॥ कवि गोकुल प्रानपियारे को हेरि हियो हरख्यो लगिबे को गरे। टरि मान गयो पहिले तिय को पिय को फिरि पाइन पानि परे॥ १९३॥

सोरठा।

पहिलेहीं हरि आइ, खरो भयो मो पैरि पै।
पीछे दई पठाइ, मैं दूती जानत नहीं॥१९४॥

चपलातिशयोक्ति लक्षण।

कारन के प्रारंभहो जहँ कारज ह्वै जाय।
तहँ चपलातिसयोक्ति सब बरनत हैं कविराय॥

यथा।

रूपभरी गुनरासि खरी करतार करी सी अरी बिलसै तू। गोकुल तो सर सी तरुनी अब लौं न लखी बलि तो सरि है तू॥ तो मुखपङ्कज के भये भौंर रहैं हरखे हित एती करै तू। पीतम को मन सौति को मान सुजान सो लूटि लयो मिलतै तू॥ १६६॥

मुख पीरी परी धरकी छतियां मन तें कढ़ि व्यौंत गये कलकै। तलबेली चढ़ी तन तापन तें बढ़ि स्वासन के उमँड़े हलकै॥ कबि गोकुल ऐसी दूतै में भई यह जीवेगी क्यों बिछुरें पलकै। रुख पीतम के चलिबे को चितै तिय के चख री झख से झलकै॥ १६७॥

सोरठा।

पिय चलिबे की बैन सुनि चितको चुरि चाव गो।
अँसुवनि बरखत नैन लिखी लीक लौं लखि परै॥

रूपकातिशयोक्ति लक्षण।

बिषई पद सों होत जहँ बिषै अर्थ को बोध।
रूपकातिसयउक्ति तहँ बरनत कवि मतिसोध॥

सवैया।

बर वारिद की पटली मधि गंग त्रिकूल सरोवरनी मैं धसै। धनुसायक फूल तिलो को जपादल दाड़िम बीच सुधा बरसै॥ कबि गोकुल कंबु चको चकई अलिसैनी सिरीस कली लौं लसै। इतनेवर भार भरी कदली भर सों लखि कौलनि कैसो बसै॥ २००॥

इन्दुबधूगन पङ्कज पै कदली पर केहरि की कटि जानौं। तापर काम सरोवरनी मनि कंचन सेनि बिलोकि बखानौ॥ तापर गोकुलनाथ सिँगारलता पर है अचरज्ज महानौ। धार धरे घिरि घेरि रहे घन भूधर कंबु कलाधर मानौ॥

सोरठा।

है पंकज पै पेखि कनकलता फूली फरी।
सरि बलि तापै देखि मीन लये ससिघनगसो॥

भेदकातिशयोक्ति लच्चन।

औरै औरै बरनियै बर्न्य व्यवस्था रूप।
भेदकातिसयउक्ति सो बरनत हैं कबि भूप॥२०३॥

यथा सवैया।

देखति हौं दिन द्वैक तें औरई ठान ठनी ठकुराइनि केरी। बैठिवे की उठिबे हँसिबे की सो औरई भाँति की बानि बयेरी॥ गोकुल बूझति हौं कहियै डरि डौरि उठी लखि रावरे केरी। औरई चाल चितौनि है औरई औरै भई बलि बोलनि तेरी॥२०४॥

अक्रमातिशयोक्ति लच्चन।

कारन औ कारज जहां होत एकहीं संग।
अक्रमातिसैयोक्ति सो बरनत सुकवि सुढंग॥

यथा।

रूपभरी गुनरासि अरी बिधि ऐसी करी सिधि तोहि सुजानहिँ। तो सरसी तरुनी जग में धरनी पै कहां बरनौ लखि आनहिँ॥ गोकुल गौने कि बासरहीं यह ढंग हो कौन के अंग ब-

खानहिँ । एकहि संग समेटि लयो बलि पीतम को मन सौति के मानहिँ ॥ २०६ ॥

सोरठा ।

लावत सांवरो अंग बानट को अटकन लगी ।
अरि अलि लागी संग चखत्रित अंक कलंक को॥

तुल्ययोगिता लक्षण ।

वर्न्य वर्न्य को धर्म इक कै अवर्न्य को होय ।
तुल्यजोगिता दुहुन मधि क्रिया एकही होय ॥

यथा ।

आनँद देत चकोरन कों बिकसैं कुमुदी सुहरै तम तोक को । जीवन को तनताप हरै करि सींचि पियूखमई करै लोक को ॥ गोकुल रावरेही में लखि तें कहां लगि लों बरनै गुन थोक को । एरे सुधानिधि तेरे उए दुख होत बियोगिन कौलनि कोक को ॥ २०८ ॥

सोरठा ।

त्यों तेजनिधि भान तपित होत सिगरो जगत।
पावत मोद महान कोक सोक तजि कोकनद॥

अवर्न्य को एक धर्म ।

रूप की खानि सुजानभरी गुन गाइबे जोग बिरंचि बनाई । तो सरसी तरुनी जग में बरनीये बिलोकि कहा सुघराई ॥ गोकुल मोहन को मन मोहन क्यौं न करै सुनियै सुखदाई । तो पग पानि चितैात लखी किसलै अस कंज की काठिनताई ॥ २११ ॥

सोरठा ।

तो कुचरुचि को देखि हानि मानि हारे हिये ।
जड़ ह्वै गए विसेखि सानुमानु अरु श्रीफली ॥

अपर तुल्ययोगिता लच्छन ।

हित में अनहित में जहां एकै कहिये धर्म ।
तुल्यजोगिता अपर यह कहत सुकवि तजि भर्म ॥

यथा ।

तो सरसी तरुनी जग में न रचीं विधनै यह जानि लई है । क्यों न बसै बस रावरे के उनमें इतनी वलि चातुरई है ॥ गोकुल रावरे के गुन रूप सराहि सकै अस को नवई है । श्री

कार जो पठई तुम कों यह सौतिनही को दु-
साल दई है ॥ २१४ ॥

सोरठा ।

रे तिय परम सुजान जानि हिये अति मोदभरु
दियेरहत नित मान सौतिन को अरु अपुन को
तुम सम और मही न, चेतसिंह सुनिये नृपति ।
हार बास कै दीन, तुम सत्रुन कों मित्र को ॥
दानी सूर न तो सरिस, लख्यौ चेत छितिपाल ।
दीनन को अरु दुवन को, देत तुही लखि माल॥

अन्यतुल्ययोगिता लक्षण ।

लहि गुन को उतकर्ष जहँ सम करि कहिये बैन ।
तुल्य जोगिता अन्य यह बरनत कवि गहि चैन ॥

यथा ।

कानन लौं चरिबोई करैं अति प्यारे लगैं
कजरारे अहो हैं । जोबन के मद सों उमगे
लखि मेरे मंढ़े जन जैनत को हैं ॥ गोकुल साँच
सराहिबे जोग जगै जग में जंग जैनत जो हैं ।
चञ्चल खञ्जन मीन मृगैन सुचैन भरे चख रावरे
सोहैं ॥ २१९ ॥

सोरठा।

तो कुच श्रीफल सान, करी कुंभ करि हित हिये।
धरि विधि अधिक सयानं, अति कठोर उन्नत करे॥

दीपक लक्षण।

जहां बर्न्य आवर्न्य को कहिये एकै धर्म्म।
एक क्रिया दुहु दिसि तहां दीपक दीपक पर्म्म॥

यथा।

एक घरी न थिरैं फिरतै रहैं कानन लौं भरि भूरि प्रभा तें। जोबन भार भरे असितौ सित सोहत एऊ अहो कजरा तें॥ गोकुल दोऊ सराहिबे जोग जगै जग में जस मोद महा तें। रावरे नैन कटाछन तें बलि खञ्जन राजत चञ्चलता तें॥ २२२॥

सोरठा।

धारे धुरवा बारि, तो कच सरस सनेह सों।
चकिचख रहत निहारि, सोभित होत धराधरे॥

दोहा।

दीपक सोहै तीनि विधि अर्थावृत्तयक मानि।
और पदार्थावृत्तयक पदावृत्तयक जानि॥२२४॥

अर्थ एक पद दोइ में जहां सुआव्रत्त लेत ।
अर्थाव्रत दीपक तहां काहत सुकबि करि हेत ॥
अर्थ दोइ पद एक को आव्रत्त करिये जौन ।
पदाव्रत्त दीपक तहां बरनत हैं कवि तौन ॥
पद औ अर्थहु को जहां आव्रत्त होइ अमन्द ।
काहत पदार्थाव्रत्त तहँ सुकवि महा तजि दन्द ॥

पदाव्रत्त यथा ।

प्रेम करौ पहिलै करिकै नजरौ न मिलै यत जैयत भागे । जानि परे तुम जैसी हौ तैसी लखि चख रावरे के अनुरागे ॥ गोकुलनाथ तिहारो न दोस है आपनोई क्रत आवत आगे । पै गुन आपुनहूं को सुनो सिगरे जन गाँवन गाँवन लागे ॥ २२८ ॥

अपरंच ।

ऊख गई कब की कटि कै रहरौ न बढ़ी न भयो सन रूड़ो । गोकुल नारे नदी तट के भरि भे जित पैयत आनन्द जूड़ो ॥ मोहन सों मिलिहै न भये कत सोच करै चित कौं निति

खूड़ो। ताप चढ़ी तिय के तन में लखि कै सिगरो बन सो बन बूड़ो॥ २२९॥

सोरठा।

गहि सुगुन गुनखानि, यह मालिनि मनमथ भरी। भरी सुरस पहिचानि, संग सुमन सुमनो गुहै॥

अर्थावृत्त यथा।

दोस करौ अपसोस इहै तुम कैयक बेरन सौहन कीन्हो। प्रेम को नेम निबाहिबो जो सो भली बिधि सों सिधि कै निधि लीन्हो॥ हैं न छपे गुन रावरे कें यह सोनै कही बकि जो उन दीन्हो। गोकुल जैसे हौ तैसे चलौ परसौ पग जो हित चाहत चीन्हो॥ २३१॥

दम्पति रमत रति रङ्ग मै उमङ्ग भरे तूहूं दुरी देखी बनी बानक सुजान की। जैसे घन दामिनि जुरत त्यों लला के हिये लोभ भरी लाड़िली अधर मधुपान की॥ गोकुल कहत थहरात तन भावती को हौ मैं ठहराति है न माल भुकुतान की। नाहीं भरी अनक बनक

सुनु सीवी भटू घुघुरू की घनक झनक, बिछु-
वान की ॥ २३२ ॥

पदार्थावृत्त यथा ।

भूपन को मान गयो ग्यान गयो बीरन को
बैरिन को प्रान गयो खलदल खरको । जनक
को सोच गयो सङ्कट सिया को पुरजन मन पन
भयो आनँद सु भर को ॥ गोकुल कहत साधु
सुखमा सरस भई भयों है असाधुन को रूप
जरो जर को । मङ्गल उदोत भयो पोत पुन्य
पानिप को टोडू खण्ड होत हीं कोदण्ड महा
हर को ॥ २३३ ॥

अपरंच ।

सब राति जगी रति रङ्ग में अंगन आलस
के गन गाजि रहे । कच छूटि छये गिरि हार
गये उर पैं नख के छत छाजि रहे ॥ कवि गो-
कुल लङ्क लटी लखि लोयन लालची मोहि सो
बाजि रहे । सखि लाजि रहै चखचारु चितै
मुख पै श्रम सीकर राजि रहे ॥ २३४ ॥

सोरठा।

चख बढ़ि लागे कान, कच बढ़ि लागे पांव सों।
चित बढ़ि लग्योस्यन, हिंत बढ़ि लाग्यौ खाभसों॥

प्रति वस्तु उपमा लक्षण।

वाक्य एक सामान को जहां कहत कवि लोय।
प्रती वस्तू उपमा तहां कहत क्रिया है दोय ॥

यथा।

बालक बैस तें या ब्रज मै बसि रूपवतीन में दै फिरी फेरी। चातुर ही बतियां समुझौ गुन रूप की रीझन जोग घनेरी॥ गोकुल तो सरसी तरुनी न लखी अबलों ठकुराइनि मेरी। राजै सुधा सो सुधानिधि यों मुसुकानि सों सोहत तो मुख एरी॥ २३१॥

सोरठा।

लसत तेज तें भान, दिनमनि वारिज बंधु वर।
धरे सुधा सुखदान, सोहत ससि बसकरि कुमुद॥

दृष्टान्त लक्षण।

जहां बिम्बप्रतिबिम्ब सो बरनन करिये आनि।
अलङ्कार दृष्टान्त तहँ कविजन कहत बखानि॥

यथा।

ठाकुर हौ तिहुंलोकन के अरु मैंहूं भिखा-रिन को अधिपैहौं। आपुन हौ नवनिद्धि धनी रचि मैं रस सो बसु छन्द लखैहौं॥ रावरे के जस को चसको सुनौ गोकुल हौं कबि कीरति गैहौं। श्रीदशरत्थ को राभलला तुम दाता बड़े बड़ो भिक्षुक मै हौं॥ २४०॥

सोरठा।

तोमुख कवि की खानि भरो जोति जगमग करै।
यही कलानिधि जानि सुधासिंधु क्षीरधितनै॥

अपरञ्च।

गाढ़बी जोग जगै जग माह घनी इतनी सुकुमारतई है। चाहतहौं रहिये इनको जू इती चख नें चलि चाह कई है॥ गोकुल जो बिधि ऐसे रचै तब तौ धरनी पर धन्य हई है। चारु सुबास सनो सरसीरुह रावरे को मुख रूप मई है॥ २४२॥

निदर्शना लक्षण।

वाक्य जो ताके अर्थ को सहस एक आरोप।
तहां कहत नीदर्सना सुकवि कहे चित चोप॥

यथा।

मोहन मंत्र जो तंत्र बसीकर जोति जगै टटका के दिया को। टोने को टामन को बिरतो मनि जौन मनोभव से करिया को ॥ गोकुल ठौर ठगौरी को बौरई काम कला चित चोर पिया को। औरन जानि हिया में चहै यह जो सब सो मुसुकानि तिया को ॥ २४४ ॥

लेप मनोघनसार को अंगन लाइ दै धार गुलाब जलै को। झाइ उसीर न्हवाइ पियूष सों आगि बुझाइ दै अंग जलै को ॥ गोकुल पाइ परौं चलि बेगि दसा कहि जात न है बिकलै को। औधि सुनाइ दे लाल को ऐबे को प्याइ दे बालहि बाय मलै को ॥ २४५ ॥

सोरठा।

ऊख मह्ख पियूष, इनको जौन मिठास है।
सो जानति पिय भूख, तो अधरन की मधुरता॥

अन्यनिदर्शना लक्षण।

जहां सु चारु पदार्थ की एक वृत्ति है स्वच्छ ।
तहां सु अन्यनिदर्सना बरनत हैं मति दच्छ ॥

यथा ।

बारन भौंर के हारन की रुचि खञ्जन की चख चाहि हरे हैं। आनन चारु सुधानिधि की कुच कोकन की सुचि चोप चरे हैं ॥ गोकुल रोमवली लतिका अवलोकि उरू कदली निदरे हैं। पङ्कज की सुकुमारतई तुव प्रानप्रिया पग पानि धरे हैं ॥ २४८ ॥

सोरठा ।

बलि तो आनन चन्द, जीती उग्जन गिरिवरो ।
तो पगपानि अमन्द, देत हरैये सरसिजहि ॥

अपर निदर्शना लक्षण ।

अर्थ असद सद को जहां होत क्रिया सों बोध ।
तहां सुअपरनिदर्सना सुकवि कहत मति सोध॥

सद अर्थ बोध यथा ।

अति जोवन भार भरे उभरे सुधरे सुखमा सुख मैं लहिये । घन पीन प्रबीन अडोल भलो जिनको थिति को मिति को चहिये ॥ मधि गोकुल हार विहारन देत उरोज अहो यह सो

कहिबे। इत नीति जनावत मीतन सों बिन अन्तरही मिलि कै रहिये॥ २५१॥

सोरठा।

धरि कुच भर कुस लङ्क, यहै जनावति जगत को। धीर धरे तें रङ्क, लखो उठावत गुर भरौ॥२५२॥

सवैया।

अति ढीली करो गतिया इनको चख में लखि चञ्चलता सिलई। कटि छीन करो करि पीन नितम्ब उरोजन की लघुता बिलई॥ कवि गोकुल खीनहि पीन करै अँग पीनहि खीनता जोहि लई। तरुनापन जो दिन द्वैक बढ़े तिन को सिखवै यह पासि लई॥ २५३॥

सोरठा।

कच घुघुरारे जोय, यहै जनावत दुरजनहिं। जितहू बन्धन होइ, तजन तजिये कुटिलता॥

व्यतिरेक लक्षण

उपमा तें उपमेय में अधिक कही गुन जोय। व्यतिरेकालङ्कार लखि प्रीति घनेरी होय॥२५५॥

यथा।

हैं परसि बर चारु दृगञ्चल रञ्जत सी सुखमा कजराई। नेकु नहीं थिर हैं फिरते रहैं कानन कों परसैं सुखदाई॥ गोकुल खञ्जन तें इन तें इतनी ये लखी हरि अन्तरताई। बेधत हैं लखते हियरो तिय के चख में इतनी अधिकाई॥

सोरठा।

तो रोमावलि रूप, अरी पन्नगी को धरे।
है गुन भरी अनूप, डसति डीठि नीठिहु परे॥

अपरञ्च।

आतप प्रताप बसुधा में भरैं करैं सुखी हित सरसिज जे बढ़ै हैं प्रेम तोय में। जारैं अघतम मारैं बैरी हिमबर जोर चारैं बेद पथ निति गयें एहि खोय में॥ गोकुल कहत भारे गुनन सँवारे बिधि परम प्रभा मैं पूरे पुन्य के समोय में। कैसे मारतण्ड सके कहैं बरिबण्ड जाके सहसौ करन की सकति कर दोय में॥

सहोक्ति लक्षण ।

सङ्ग भाव जहँ कहत हैं मनरञ्जन कवि लोग ।
तहँ सहोक्ति बरनत चतुर हरिहर कैसो जोग ॥

यथा ।

भरी रूपरास धरे परिमल पास तू है क्यों न करै कमल कलानिधि सों कसरो । भौंरन चकोरन सों मोरन सों एवी कहूं पावती ही बगर डगर लों अवसरो ॥ गोकुल गई ही आज कातिकी को न्हान नीर सवहीं न सूंघि कह्यौ मालती सों मसरो । सहज सुबास तेरे अंगनि को एरी बीर कोसन लों गयो साथ कालिन्दी के पसरो ॥ २६० ॥

सोरठा ।

चलि दुरि तुरत अवास, छोड़ि कुञ्ज फूले विपिनि।
तो संग सुतन सुबास, भौंर भीर आवत चली॥

विनोक्ति लक्षण ।

कछू वस्तु बिन बरनिये वर्नीय जहँ हीन ।
अलङ्कार सुविनोक्ति सो बरनत सुकवि प्रवीन॥

यथा।

राति जगी पिय कीं संग में थिर ह्वै सी रही मनो नीर सों न्हाये। रङ्ग पगी उमगी सुख सों भपकी पलकैं सुखमा सरसाये॥ गोकुल हौं बलि जाति बिलोकि गई बलि यों कहिये सिर नाये। खञ्जन सी न रहीं अँखिया मनरञ्जन अञ्जन के बहि आये॥ २६३॥

सोरठा।

मन्द मधुर सुर लीन, अरी बाँसुरी तू बजै।
सतसङ्गति बिन हीन, भई लगी मुख गोप के॥

तृतीय विनोक्ति लक्षण

बर्ननीय बरनत जहां कछू वस्तु बिन रम्य।
दूजी कहैं विनोक्ति सब अलङ्कार बुधि गम्य॥

यथा।

नैहर में पिय की मिलिबे को उतारि गई सकुचानि घिरे तें। गोकुलनाथ दयी हठि आ-नक सो पसयी श्रम खेद तिरे तें॥ भोरहिं आइ लख्यौ सजनीन कियो परिहांस अनन्द

थिरे तें। कैसी लसैं अरुने अंगुरी बलि रावरे की बिछुवानि गिरे तें ॥ २६६ ॥

सोरठा।

बिनु कठोरता अम्ब, लसत रावरे के चरन ।
सब जग के अवलम्ब, बसत साधुजन के हिये ॥

समासोक्ति लक्षण ।

प्रस्तुत सों अस्फुर्ति जहँ, अप्रस्तुत की होति ।
समासोक्ति ज्यों दीप तें मिलत दीप की जोति ॥

यथा ।

जीवन के दानि हौ सुजान हौ सरस अति जगत के जीवन को आनँद उमाहे हौ। सुजस को पायो परस्वारथ को धायो धरा तपनि मि· टाइबे को मत अवगाहे हौ॥ गोकुल कहत इन्हें आस रावरे की है जू प्यास इनकी न मेटि देत काहे काहे हौ। गरजि घुमरि घनश्याम क्यों बरावत हौ कछू चातकीनहू को अपराध चाहे हौ॥ २६९ ॥

सोरठा ।

लतानवल तनु अंग, जाति जरी जोबन बिना ।
कहासिख्योयहढङ्ग, तरुनअरुननिरदैनिरखि ॥

परिकर लक्षण ।

अभिप्राय जहँ क्रिया की सुबिसेखन में होत ।
अलङ्कार परिकर तहां बरनत हैं कवि गोत ॥

यथा ।

करकत रहैं धार ढरकति आँसुन की हरकत लाज तन तपनि पसारे हैं। पल न परन देत कल कल पावत हैं जानै न जलन जन जी में निरधारे हैं ॥ ह्वै के निरदै री उन्हैं ऐसे न चितै री बीर गोकुल के नाथ वे तो रावरे पियारे हैं । ईछन में गड़ैं क्यौं न री छन बिलोकतहीं तीछन कटाछ बरे ईछन तिहारे हैं ॥

अपरञ्च ।

आवतही जमुना तट तें हरि तोहि मिलौ ठकुराइनि मेरी । ता छिन तें करसायल लौं घुमरै न परै पल को कल एरी ॥ गोकुलनाथ